मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 10

MTT-055

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (संशोधित)

(पी.जी.डी.टी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2023

एम.टी.टी.-055 : अनुवाद : साहित्य और जनसंचार

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रश्न संख्या **1** से **6** तक किन्हीं **चार** के उत्तर लगभग **750** शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रश्न संख्या **7** तथा **8** अनिवार्य हैं। सभी प्रश्नों के अंक उनके समक्ष दिए गए हैं।*

---

1. 'साहित्य' का तात्पर्य समझाते हुए 'सर्जनात्मक साहित्य एवं अनुवाद' का विवेचन कीजिए। 15

2. कविता के अनुवाद की विभिन्न पद्धतियों की सोदाहरण चर्चा कीजिए। 15

3. 'विश्व साहित्य की अवधारणा और अनुवाद' पर विस्तृत लेख लिखिए। 15

4. जनसंचार के प्रकारों पर प्रकाश डालिए। 15

5. 'डबिंग-अनुवादक : अपेक्षाएँ और चुनौतियाँ' विषय पर निबंध लिखिए। 15

6. विज्ञापनों के अनुवाद की विभिन्न युक्तियों की सोदाहरण चर्चा कीजिए। 15

7. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 20

Cambridge was my metaphor for England, and it was strange that when I left it had become

altogether something else, because I had met Stephen Hawking there. It was on a walking tour through Cambridge that the guide mentioned Stephen Hawking, 'poor man, who is quite disabled now, though he is a worthy successor to Isaac Newton, whose chair he has at the university.' And I started, because I had quite forgotten that this most brilliant and completely paralysed astrophysicist, astrophysicist : scholar of astrophysics – branch of physics dealing with stars, planets, etc. 2019-2020 the author of 'A Brief History of Time', one of the biggest best-sellers ever, lived here. When the walking tour was done, I rushed to a phone booth and, almost tearing the cord so it could reach me outside, phoned Stephen

Hawking's house. There was his assistant on the line and I told him I had come in a wheelchair from India (perhaps he thought I had propelled myself all the way) to write about my travels in Britain. I had to see Professor Hawking – even ten minutes would do. 'Half an hour,' he said. 'From three-thirty to four." And suddenly I felt weak all over.

अथवा

The 2023 edition of IPL gets underway from tomorrow when defending champions Gujarat Titans take on four-times champions Chennai Super Kings. The 2023 edition will be a mix of the old and the new, returning to the home-and-away format across 70 matches in the first phase, with four knockouts to follow.

There are also host of new rules for the 2023. season. For the first time, IPL sides will be allowed to make a tactical substitution with an 'Impact Player' coming in to bat or bowl as needed. This will give teams a chance to bring in a substitute player at any time during the game. Any Indian player can act as an impact player, while an overseas player can only be used in the role if the team hasn't used the full quota in the starting XI. As a standard rule, IPL teams can contain a maximum of four overseas players in its starting line-up.

For this purpose, the rules around the coin toss have been changed. Captains can now confirm a starting line-up after the toss, instead of before, depending on if they're batting or bowling first.

Not everyone is convinced it's the best way forward.

8. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 20

इंसान के बारे में कोई कितना भी आकलन कर ले, वो पूरी तरह किसी भी इंसान को नहीं समझ सकता। इंसान को बदलते देर नहीं लगती। वक्त न कुछ ऐसी करवट ली कि अम्मां भी बहुत बदल गईं। आदी के ब्याह के बाद अम्मा जो पहले एकदम रूढ़िवादी थीं, काफी मॉडन हो गईं... बोलचाल, खान-खान... यहाँ तक कि पहनावे-पोशाक में भी। जो अम्मा दीपा की शिकायत करते नहीं थकती थीं, वही अब दीपा से सखी की तरह बतियाती थीं। उनकी जबान पर हर वक्त 'आदी की दुल्हन' रहता था। दीपा न कभी सिर पर पल्लू लेती

थी... न कभी बड़ों के आने पर तहजीब से खड़ी होती। शिष्टाचार का ख्याल नहीं था उसे। फिर भी अम्मा उसे कभी न टोकतीं। लेकिन अगर यही क्षिप्रा कर दे, तो तपाक से अम्मा बोल पड़तीं - 'बड़े घर के संस्कार अलग ही होते हैं। गरीब घरों के रहन-सहन भी गरीब ही होते हैं।' दीपा के विवाह के बाद इस घर की परिस्थितियाँ काफी बदल गई थीं।

चुपचाप रहने वाली रिया चुहलबाज हो गई थी। 'भाभी-भाभी' कहकर हमेशा दीपा के साथ चिपकी रहती और तो और रिश् भी मामी, ये खिलौने चाहिए, मामी वो खिलौने चाहिए की रट लगाए रहता। अक्सर जब घर के सारे लोग इकट्ठे होते तो ऐसा लगता कि क्षिप्रा और अनय पराये घर के हैं, और बाकी सब एक हैं। क्षिप्रा सोचती, 'आखिर उससे कौन-सी चूक हुई है,

जिससे ये लोग अजनबियों जैसा बर्ताव करते हैं। यहाँ तक कि अनय से भी।' दरअसल रिश्तों के जोड़-घटाव में दीपा काफी माहिर है। किससे कितना, कब कहाँ-क्या बोलना है, किसे कितना सम्मान देना है, किसे नहीं, इसका हिसाब-किताब तो बखूबी कर लेती है। शायद इसलिए वो सबको खुश कर लेती है। इसके विपरीत क्षिप्रा अपने किए का दिखावा कभी नहीं करती।

अथवा

विश्व बैंक की नई पहल से निजी क्षेत्र में कोयला आधारित बिजली परियोजनाओं में निवेश के रास्ते बंद हो गए हैं। जलवायु खतरों से निपटने की दिशा में इस कदम को महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कोयला सर्वाधिक जिम्मेदार है।

घोषणा जलवायु परिवर्तन के खतरों से घिरी चिंताओं के बीच दुनिया के लिए कुछ राहत की खबर लाई है।

विश्व बैंक की शाखा 'अंतरराष्ट्रीय वित्त निगम' (आई.एफ.सी.) ने हाल में कहा है कि वह नई कोयला परियोजनाओं में निवेश को मंजूरी नहीं देगी। जलवायु विशेषज्ञ इस फैसले को भारत और समस्त विश्व के संदर्भ में महत्वपूर्ण मान रहे हैं। इससे हरित ऊर्जा में निवेश बढ़ने के आसार हैं। इस फैसले के बाद भारत भी उन्हीं कोयला बिजली परियोजनाओं पर आगे बढ़ेगा, जो पहले से मंजूर हो चुकी हैं। बता दें कि आई.एफ.सी. बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों को धन देता है, जो बदले में बुनियादी ढाँचे और ऊर्जा परियोजनाओं को उधार देते हैं। संस्था ने कथित तौर पर भारत में लगभग 88 वित्तीय संस्थानों को करीब पाँच बिलियन डॉलर का कर्ज दिया है।

आई.एफ.सी. ने कहा कि पेरिस समझौते की महत्वकांक्षाओं के साथ आलोक में एक कदम उठाया गया है। साल 2020 में आई.एफ.सी. ने एक नीति का अनावरण किया था, जिसमें उसने अपने ग्राहकों को 2025 तक कोयला परियोजनाओं में अपना एक्स्पोजर कम करने और 2030 तक शून्य करने की बात थी। उस नीति में नए निवेश को रोकने की बात नहीं थी, लेकिन इस नई घोषणा से अब स्थिति बदल गई है।